Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIII Issue – IV July – August 2024

मधुकर सिंह के कथा साहित्य की वैचारिकता

मार्गदर्शक
डॉ. रविंद्रकुमार शिरसाट
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती

शोध छात्र
श्री. नितीन मधुकर बोडखे

प्रतावना:

मधुकर सिंह दलित साहित्य के एक समर्थ कथाकार एवं उपान्यासकार सिद्ध है। उन्होंने अपने कथात्मक साहित्य में दलित विमर्श को सशक्त अभिव्यक्ति देकर दलित कथा साहित्य उभारा है। आज बिहार के साथ साथ अन्य राज्यों में भी मधुकर सिंह दलित लेखकों में सबसे अग्रपंक्ति में स्थापित हो सके है। अबतक उनके पंद्रह उपन्यास और सात कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। बहुभाषाओं के ज्ञाता होने के कारण उन्होंने मराठी, अँगरेजी, रूसी, जापानी तथा चीनी भाषाओं की कहानियों का अनुवाद भी किया है। ऐसे बहुप्रतिभा संपन्न मधुकर सिंह कथाकार के रूप में सर्वोपरी ठहरते है। इनके साहित्य पर प्रेमचंद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। शायद यही वजह रही होगी जिससे प्रेमचंद के पुत्र श्रीपतराय प्रभावित हुए और अपनी पत्रिका 'कहानी' में उनकी कहानियाँ प्रकाशित करते रहें। इसमे कमलेश्वर का भी उन्हें योगदान मिलता रहा जिससे उन्हें प्रेरणा मिलती रही। विभिन्न जन-आंदोलन भी इनके लेखन के प्रेरणास्त्रोत ठहरते है, जिसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने एक साक्षात्कार में बताया कि, समय पर उभरे जन आंदोलन ही मेरी रचना के प्रेरणास्त्रोत है चाहे वह सन १९७६ का नक्सलवादी आंदोलन हो, या सन १९७८ का जनआंदोलन हो । मधुकर सिंहजी के कथात्मक साहित्य का वैचारिक पक्ष और उससे जुडी गरीबी, जातियता, विषमता तथा आशावाद आदी धारणाओं को प्रस्तुत आलेख में अशतः स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed *Based on a work at http://www.goeiirj.com*

वैचारिक पक्ष:

हिन्दी का दलित साहित्य आरंभिक तौर पर मराठी दलित साहित्य से प्रभावित रहा है। दलित साहित्य के मूल में फुले-शाहू-आंबेडकर' विचारधारा को देखा जाता है। प्रचलित वर्णव्यवस्था के प्रति का आक्रोश तथा अपेक्षित समाज परिवर्तन की दीशा में जब विशेष कर चरित्रपरक तथा आत्मकथन परक साहित्य लिखा जाने लगा तब इसे साहित्य की कोटी में रखकर भी एक अलग धारा के रूप में स्थापित किया गया ।

दलित साहित्य निर्मिती के मूल में महात्मा फुले द्वारा लिखा गया साहित्य, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के मानवतावादी विचार तथा राजर्षी शाहू महाराज के कृतिकार्यक्रमआदि को देखा जाता है। नवसमाज की संरचना हेतू

प्रचलित वर्णवादी समाजव्यवस्था का उच्चाटन करने के लिए महात्मा फुलेने अपनी कलम चलाई इतनाही नही बल्कि समाज परिवर्तन की दिशा में कृती कार्यक्रम भी चलाने लगे जिससे सनातनी हिन्दू नेताओं को वर्णव्यवस्था नष्ट होने का खतरा महसूस होने लगा और उन्होंने महात्मा फुले के मार्ग में प्रतिबाधाएँ लाना आरंभ किया। कभी डरा धमकाकर तो कधी आरोप-प्रत्यारोप कर उन्हे सताया जाने लगा किन्तु वे अपने विचारों पर अडिग रहें।

अपने विचारों पर अडिग रहने का साहस बहुत कम लागों में होता है। साहित्य के क्षेत्र में यही वैचारिक पार्श्वभूमी कथाकार तथा उपन्यासकार मधुकर सिंह में पायी जाती है। सन १९८० में कम्युनिस्टों पर कई पाबंदिया लगने के बावजूद भी वह कम्युनिस्टों, मार्क्सवादी विचारों को अपने साहित्य का विषय बनाते रहें। वर्णवादी व्यवस्था का विरोध करते रहें इसिमें इनकी निडरता दिखाई देती है।

मधुकर सिंह के साहित्य के वैचारिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए उनके साहित्य का जातिगत, वर्णव्यवस्था परक, आस्थापरक, गरीबीविषयक, स्त्रीविषयक तथा दलितो की समस्याविषयक परिप्रेक्ष्य जानना अभिप्रेत है।

जाति व्यवस्था

हमारे भारतीय समाज में ऊँच-नीचता, असमानता को बढावा देनेवाली प्राचीन परंपराओं तथा रूढियों को मधुकर सिंह नकारते हुए दिखाई देते है। अपने उपन्यासों तथा कथाओं के पात्रों के माध्यम से उनकी यह दृष्टि स्पष्ट होती है। समय समय पर ईश्वरी प्रकोप का डर दिखाकर होनेवाली प्रताडना, छल आदि से तंग दलित समाज में अब नवचेतना उभरने लगी है। वह जातियवादी शक्तियों के खिलाफ विद्रोह करते दिखाई दे रहे है। 'सोनभद्र की राधा' उपन्यास का नायक गोविन एक चमार युवक है। वह परंपरागत जातीय वादी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करता है। जमनापुर के दलितों को वह अपने अधिकरों के प्रति जागृत करता है। पिता को उसके इस तरह के व्यवहार से एक डरयुक्त चिंता सताती है तब वह अपनी भावना व्यक्त करता हे कि, "मेरी एक कल्पना है इस जमीन पर वही लोग बसेरा लेंगे जो जात-पात और अमीरी-गरीबी का भेद भूल जायेंगे। हम लोग वहाँ एक नई दुनिया बनाएँगे।"[१]

'अगिन देवी' उपन्यास का नायक ममद मुस्लिम है तथा नायिका अगिन चमार जाति की दलित है जो ममद से प्रेम करती है। इनके विषय में उपसन्यासकार लिखते है-'अगिनिया और ममद के दो धर्म दो जाति। परमात्मा करे यह छूत की बीमारी हमारे गाँव में नहीं फैले--सून लो पंचो गरीब की न कोई जाति होती है, न धर्म-ममद और अगिन पति-पत्नी है इनको गाँव से कोई निकाल नहीं सकता। ये जब तक जिन्दा है. इसी गाँव में रहेंगे।"[२]

मेरे गाँव के लोग' उपन्यास के जगतसिंह, गणोरिसिंह तथा मास्साहेब आदि पात्र गाँव में होनेवाले जातिगत संघर्ष में अपना योगदान देते नजर आते है। स्वयं मधुकर सिंहजीने जाति व्यवस्था की मार को झेला है। उसी की अभिव्यक्ति अपने पात्रों के माध्यम से करते हुए वह इस प्रचलित व्यवस्था में परिवर्तन की कामना भी करते है और एक आदर्श एवं जाति धर्म विरहित समाज निर्माण करना चाहते है। इस विषय में उनकी कुछ कहानिया महत्त्व पूर्ण ठहरती है जिनमे 'लहू पुकारे आदमी' भाई का जख्म' तथा 'पहला पाठ' जैसी अनेक कहानियाँ गिनाई जा सकती है।

प्रचलित, रूढीग्रस्त, पारंपारिक समाज व्यवस्था की जडे आजादी के बाद और भी गहरी होती रही है। इन शक्तियों के विरोध में मधुकर सिंह के उपन्यास तथा कहानियों के पात्र आगाज करते दिखाई देते है। मधुकर सिंह बचपन से हीं

संवेदनशील स्वभाव के होने से उन्होंने अपने साहित्य कर्म के लिए भी संवेदनशील विषय को अपनाया। कभी अपने विषय से हटे नहीं बल्कि वही डटे रहे। अपने जीवन में परिस्थितियों से जो भी अनुभव मिले उसि की अभिव्यक्ति अपने पात्रों के माध्यम से करते रहे। सामाजिक विषमता के ताप को उन्होने स्वयं भोगा है। यही सामाजिक विषमता उनके लेखन कार्य में सहायक रही है और इस से उन्हे समाजिक परिवेश देखने-समझने का एक नया नजरिया मिला है।

भारतीय समाज की विषमता की स्थिति को बदलने की क्षमता यदि थी तो वह मार्क्सवादी विचारधारा में थी। विषमता को मिटाने और समानता को स्थापित करने में मार्क्सवाद किस तरह सहायक हो सकता है इसे मधुकर सिंह जी पढते और सुनते आ रहे थे। अतः उनपर साम्यवादी विचारों का प्रभाव अनायास ही पडता दिखाइ देता है। वर्गीय तथा वर्णीय दोनो विषमताओं से सामान्य जन संघर्षरत रहे है। मधुकर सिंह के साहित्य में इसी संघर्ष को वाणी मिली है। इनकी यह धारणा गलत साबित हो गई जब उन्होंने देखा कि मार्क्सवाद तो वर्गीय समाज की विषमता को मिटाकर समानता लाने की बात करता है, वर्ण व्यवस्था की असमानता के विषय में कुछ भी नहीं कहता है। अतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में मार्क्सवादी साम्यवाद कोई मायने नहीं रखता इसे वे समझ गए थे। गाँवो को उच्चवर्णीय जमीनदारों, सामंतो तथा साहुकारों के आतंक से मुक्ति तभी संभव है, जब वहाँ के लोग अपने हक-अधिकारों को समझ सकेगें, वर्णव्यवस्था की कुट नीतियों को समझ पाएंगे और शिक्षित होंगे ।

उनके उपन्यास 'सबसे बडा छल' में वर्गीय तथा वर्णीय असमानता का चित्रण मिलता है। इसी विषमता के कारण उनकी पारिवारिक, सामाजिक प्रतिष्ठा में बाधाएँ आती है। जमीनदारी प्रथा किस तरह विकास के मार्ग में प्रतिबंधक होती है, उसे लेखक ने विस्तार ते स्वष्ट किया है। उपन्यास का नायक देवनाथ मध्यवर्गीय है जो हरितक्रांति में गाँव के किसानों मजदुरों को शामिल कराने का तथा हरितक्रांति के दायरे में लाने का प्रयास करता है किन्तु गाँव के जमीनदार उसके खेत को ध्वस्त कर देते है। जमीनदारी प्रथा का विरोध करतेवाले बुटाई सिंह को भी मार दिया जाता है। गाँव वालों को आतंक दिखाकर उनसे अपने अनुरूप व्यवहार करवा लेने की अमाणुष, शोषक जमीनदारी प्रवृत्ति का मार्मिक चित्रण उपन्यास में मिलता है।

१९९८ ई. सन में प्रकाशित उपन्यास 'बाजत अनहद ढोल' में मधुकर जी ने संथालों तथा अग्रेजो के संघर्ष को चित्रित करते हुए इसे आजादी की पहली लडाई घोषित करने का ढाढस किया है। उनकी इस विषय में यह मान्यता है की इतिहास लिखने वाले सदाही सत्य की कसौटी पर खरे नहीं उतरते है। पूर्वाग्रह दूशित मानसिकता के चलते 'आदिवासियों के बलिदानों को सीमित कर दिया गया और इस घटना के कितीनेही वर्षों बाद के सन १८५७ के सैनिकी विद्रोह को तथाकथित इतिहासकारों ने आजादी का पहला विद्रोह सिद्ध कर दिया। मधुकर सिंहजी भारतीय वर्णवादी समाज व्यवस्था में परिवर्तन चाहते है जिसे अपने औपन्यासिक तथा कहानियों के पात्रों द्वारा उन्होंने व्यक्त किया है। 'सोनभद्र की राथा' उपन्यास की 'राथा' उच्चवर्णीय जमीनदार की कन्या है जो परंपरागत बंधनों को ठुकराती है और एक हरिजन युवक से विवाह कर लेती है'। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने विषमता निर्मूलन के लिए आंतर जातीय विवाह की आवश्यकता पर जोर दिया था। इस दिशा में मधुकर सिंहजी भी सक्रियता से अपना साहित्य कर्म करते नजर आते है। उनके नायक-नायिका जाति-पॉति की दिवारों को तोडते और विषमता से समानता की और आगे बढ़ते दिखते है।

'आर्य चाणक्य' उपन्यास में वर्णवादी व्यवस्था का तथा चाणक्य की सर्वहारा वर्ग के प्रति की संवेदना का चित्रण मधुकर सिंहजी ने किया है। प्रस्तुत उपन्यास में सम्राट नंद को सामंती व्यवस्था का तथा चाणक्य को सर्वहारा का प्रतीक बनाया गया है। एक ब्राह्मण कुल से जन्म लेकर भी चाणक्य पारंपारिक वर्ण व्यवस्था प्रणित उँच नीचता का द्योतन नही करते । आजादी के बाद भी दलित समाज का हर संभव शोषण होता रहा। तंग आकर गाँव छोडकर शहर भागनेवालों की तादात बढ़ने लगी। जान-बची लाखो पाएँ यह सोचकर इन दलितों को राहत मिलती है किन्तु अपना वतन, अपनी जमीन छीन जाना क्या कम है। इसे लेखक ने सोनभद्र की राधा' उपन्यास में स्पष्ट किया है। "हम शहर चलकर रिक्शा खीचेंगे, शांती से दो रोटी मिल जाएगी। वहाँ कोई छोटा-बडा समझनेवाला तो कही न मिलेगा।"[३] इस उक्ति से गाँव के दलितों की मनोव्यथा स्पष्ट होती है।

स्त्री विचार

भारतीय वर्णवादी समाज व्यवस्था में नीहित कठोर नीतिनियमनों के कारण शूद्र वर्ण व्यवस्था में स्त्री को भी शुद्रों की तथा पशुओं की ही श्रेणी में रखा गया जिसका वर्णन मनुस्मृति में मिलता है। 'रामचरित मानस' के रचयिता तुलसिदास ने भी इसका समर्थन किया है। वे लिखते है-

'शुद्र, गावर, ढोर, पशु, नारी-वे सब ताडन के अधिकारी'। दलित हो या स्त्री दोनों समाज के अभिन्न वर्ग ठहरते है जिन्हे मनुस्मृति में पशुवत ठहराकर दंडित होने के अधिकारी घोषित कर दिया। आगे रामराज्य की संकल्पना रखनेवाले तुलसीदास ने भी इसका समर्थन किया। महात्मा फुले और सावित्रिबाई फुले के अथक प्रयासों ने स्त्रियों में जागृती आती गई और स्त्री विषयक प्राचीन दृष्टिकोन बदलने लगा। मधुकर सिहंजी मराठी भाषा के जानकार थे। महात्मा फुले, डॉ. आंबेडकर के लेखन से वे प्रभावित रहे है। यह प्रभाव उनके कथा साहित्य में स्पष्ट देखा जा सकता है। स्त्री विषयक वही संवेदना एवं मानवीयता इनके साहित्य में झलकती है। इनके स्त्री-पात्र जहाँ असहाय, दरिद्र, लाचार दिखाई देते है वही यह पात्र स्वाभिमानी, आक्रमक तथा विद्रोही भी होती हुई नजर आती है।

'उत्तरगाधा' उपन्यास की रेवती के माध्यम से लेखक ने भारतीय दलित स्त्रियों की करूण दशा को स्पष्ट किया है । आज भी बिहार, राजस्थान की स्त्रियों को घूंघट में और चार दिवारों के अंदर ही रहना पडता है। स्त्री की इस अवस्था को बयान करते हुए लेखक लिखते है- 'रेवती घबराकर आँगन में निकल आयी। बित्ता भर घूंघट काढकर अपने मरद (सुदेव) के सामने खड़ी हो गयी। परन्तु सुदेव की झुंझलाहट तब भी खत्म नही हुई थी। अभी तो मेहरारू को गौणा में आये एक सप्ताह भी नहीं हुआ था। आज आँगन में निकल आयी, कल पडोस में निकलकर किसी के यहाँ उधार-पेचा के लिए जाएगी, फिर खेत-बघार।"[४] दलितों की आर्थिक विपन्नता का फायदा उठाने वाले गाँव के जमिनदार साहुकार इनकी बहू-बेटियों को बुरी नजर से देखते है। रेवती स्वाभिमानी स्त्री है वह चरित्रवान भी है जिससे वह एक आदर्श स्त्री के रूप में उभरती है। स्त्रियों को विपरित अवस्था में भी धैर्यवान बने रहने की सलाह मधुकर सिंह ईस पात्र के माध्यम से देना चाहते है।

प्रचलित वर्णवादी व्यवस्था को ठुकराकर विद्रोह करने में मधुकर सिंह जी के पुरूष पात्रो के साथ साथ स्त्री पात्र भी आगे आते हैं। समाज परिवर्तन में अब स्त्रियों को आगे आने की आवश्यकता पर लेखकने जोर दिया है। 'अगिन देवी' उपन्यास की केंद्रिय स्त्री पात्र 'अगिन' चमार जाति की लड़की है जो जुझारू है और बालविधवा है। अधेड उम्र के व्यक्ति 'रामरतन' से जबरन ब्याही जाने पर भी वह अपने बचपन के सहपाठी अहमद (ममद) से प्रेम करती है। वह दोनो एकसाथ

रहने लगते है जिसे जात पंचायत अमान्य करती है। उसी गाँव की एक मुस्लिम लडकी को जमीनदार मुचकुल बाबू उठवा कर ले जाता है। उसपर अत्याचार करता है तब अगिन कहती है-'हम सभी के हाथ हँसुआ है न? जैसे डम थान के डंठल काट रहे है,। वैसे क्यो जुलुम की गर्दन नहीं काट सकते ?"[५] मधुकर सिंहजी स्त्री के शील को सर्वोपरी मानते हुए ऐसी प्रतिकुल स्थितियों में स्त्रियों को जान की बाजी लगाने का ढाढस इस पात्र के माध्यम से बंधाते है।

अंग्रेजों ने जमीनदारों को चालान लेकर उनकी जमीनदारी बरकरार कर दी थी। परिणामतः जमीनदारों के अत्याचार बढने लगे। उनके दलाल भी जनता को लूटने लगे। गाँव की दलित स्त्रियों पर अत्याचार की घटनाएँ आये दिन घटती रही। मधुकरजी ने 'अर्जुन जिंदा है" उपन्यास में इस अत्याचार को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है तथा जमीनदार की पत्नी लाखो' के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि एक स्त्री को दुसरी स्त्री से सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए तभी सही मायने में स्त्री अत्याचार रोके जा सकेंगे।

मधुकर सिंह की कहानियों में भी संघर्ष करती स्त्री का चित्रण अनेको स्त्री पात्रो के माध्यम से आया है। अपने स्त्री पात्रों के होनेवाले शोषण, अन्याय अत्याचारों के स्पष्टिकरणद्वारा लेखक स्त्री सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगाते है। प्रासंगिक तौर पर स्त्रियाँ कहाँतक सुरक्षित है इस विषय पर चर्चा तो होती है किन्तु स्त्री पर होनेवाले अत्याचार कम नहीं हो रहे है। अतः यह कहा जा सकता है कि मधुकर सिंहजी के कथा साहित्य में व्यक्त उनके विचार प्रासंगिक ठहरते है।

निष्कर्षतः

यह स्पष्ट होता हे कि एक जनवादी लेखक के रूप में दलित साहित्यकारो में मधुकर सिंह की अपनी एक स्वतंत्र पहचान स्थापित हो गई है। इनका कथा साहित्य वर्ण व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था की दरियों को मिटाकर भेदभाव रहित समाज निर्माण की दिशा में प्रेरणादायी व्हरता है।

संदर्भ ग्रंथसूची

१) सिंह मधुकर 'सोनभद्र की राधा' राजपाल एंड सन्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७६, पृ-६१
२) मधुकर सिंह-'अगिनदेवी' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९८१,५९६.
३) सिंह मधुकर 'सोनभद्र की राधा' राजपाल एंड सन्स, प्रथम संस्करण-१९७६, पृ-२७ भारती प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७८, १-४८
४) सिंह मधुकर 'उत्तर गाथा' भारती प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९७८, पृ. क्र.४८
५) मधुकर सिंह-'अगिनदेवी' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९८१,५-२४